विवरण

देश में गत तीन वर्षों में उत्पादित स्वर्ण की मात्रा और मूल्य

कंपनी का नाम	स्वर्ण मात्रा (कि.ग्राम में) और मूल्य (करोड़ रु. में)					
	1988–89		1989–90		1990–91	
	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
I. भारत गोल्ड माइंस लि.	943.19	29.95	773.35	24.97	764.24	26.47
II. हट्टी गोल्ड माइंस कंपनी लिमिटेड	965.00	29.53	875.00	29.31	1049.00	36.33*
III. हिंदुस्तान कापर लि. (उपोत्पाद)	100.00	2.72	508.00	14.86	277.00	9.99
कुल योग :	2008.19	62.20	2156.35	69.14	2090.25	72.79

*आंकड़े आंतिम हैं।

नोट : केवल भारत गोल्ड माइंस लिमिटेड और हट्टी गोल्ड माइंस लि. प्राथमिक सोने का सीधे खनन और उत्पादन करती हैं। हिंदुस्तान कापर लि. सोने का उपोत्पाद के रूप में उत्पादन करता है।

देश में सोने का भंडार

3449. डा० जितेन्द्र कुमार जैन:
सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा:

क्या खान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत गोल्ड माइंस लिमिटेड द्वारा पिछले कुछ वर्षों से सोने के उत्पादन के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त न कर पाये के क्या कारण हैं;

(ख) क्या यह सच है कि इस उपक्रम द्वारा वर्ष 1991 में भी अपना उत्पादन लक्ष्य प्राप्त कर लिए जाने की संभावना नहीं है;

(ग) यदि हां, तो इसके क्या कारण है; और

(घ) देश में उपलब्ध सोने के भंडारों को ध्यान में रखते हुए इसके भंडार में वृद्धि करने के क्या कदम उठाये गए थे और इस संबंध में कितना अतिरिक्त व्यय किया गया ?

खान मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री बलराम सिंह यादव): (क) भारत गोल्ड माइंस लिमिटेड कोलार गोल्ड फील्ड में 110 वर्षों से भी अधिक पुरानी खानें चली आ रही है। अधिक

भंडारों में कमी, ग्रेड में गिरावट, अति गहराई पर खनन और कष्टकर खनन दशाओं के कारण, सोने का उत्पादन घट रहा है।

(ख) और (ग) उपर्युक्त (क) में व्यक्त कारणों के आलोक में तथा भारी वर्षा से खानों में बाढ़ आने की खराबी आदि के कारण से, कंपनी वर्ष 1991-92 के 790 कि. ग्रा. के उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएगी।

(घ) सरकार ने सातवीं योजना से ही सोने के लिये गवेषण तेज कर दिया था और अब सोने का उत्पादन बढ़ाने की संभावना निर्धारित करने के लिए आंकड़ों का संयोजन कर रही है। इस बीच, भारत गोल्ड माइंस लि. द्वारा, अयस्क पछोड़न का शोधन करके तथा चिगारगुंटा स्थित उथले निक्षेपों का 8.00 करोड़ रु. की लागत से विकास करके, सोने का उत्पादन बढ़ाने के उपाय आरम्भ किए गए हैं।

3450. [*Transferred to the 19th December, 1991*]

भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड द्वारा उपलब्ध निधियों का कल्याणकारी प्रयोजनों के लिए उपयोग में न लाया जाना

3451. **श्री राम अवधेश सिंह :** क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पर्यावरण सुधार के साथ-साथ इस्पात कारखानों के समीप रहने वाले स्थानीय निवासियों के कल्याण के प्रयोजनार्थ विश्व बैंक द्वारा प्रदत्त धनराशि भारतीय इस्पात प्राधिकरण के पास जमा है परन्तु उसे उपयोग में नहीं ला जा रहा है; और

(ख) क्या कौंउन्सिल फॉर रूरल वेलफेयर नामक एक पंजीकृत संस्था द्वारा प्रस्तुत की गई एक परियोजना भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड के पास गत छः माह से लम्बित पड़ी है ?

इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री सन्तोष मोहन देव): (क) "सेल" के संयंत्रों में अन्य बातों के साथ-साथ पर्यावरण प्रबंध और प्रदूषण नियंत्रण का अध्ययन करने के लिए स्टील अथारिटी आफ इंडिया लिमिटेड (सेल) को विश्व बैंक से ऋण और अनुदान प्राप्त हुआ है। इस अध्ययन को दिसम्बर, 91 के अन्त तक पूरा किया जाना है। इस धन के कुछ भाग को प्रदूषण नियंत्रण संबंधी कुछ उपस्कर खरीदने के लिए इस्तेमाल करने के लिए "सेल" ने प्रस्ताव किया है और विश्व बैंक से इसकी स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रहा है।

(ख) ग्रामीण विकास परिषद ने बोकारो स्टील सिटी के आसपास के ग्रामीण तथा जनजातीय क्षेत्रों में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए एक उद्यम प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने के संबंध में सेल को एक प्रस्ताव भेजा है। इस क्षेत्र में प्रचालनरत सरकारी क्षेत्र के अन्य उपक्रमों के परामर्श से "सेल" में इस प्रस्ताव की जांच की जा रही है।

सरकारी क्षेत्र के एकक

3452. **श्री राम अवधेश सिंह:** क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उनके मंत्रालय के अधीन सरकारी क्षेत्र की कम्पनियों की संख्या कितनी है और उनके नामों, मुख्यालय शेयर पूंजी, वर्तमान सम्पत्तियों तथा पिछले तीन वर्षों के दौरान उन्हें हुए लाभ एवं हानि का ब्यौरा क्या है;

(ख) विदेशी मुद्रा का संदाय करके विभिन्न देशों से किए गए सामान मशीनरी तथा कच्चे माल के आयात का ब्यौरा क्या है और इस माल का आयात किन-किन देशों की कौन-कौन सी कम्पनियों से किस कीमत पर किया गया था;